

भारत सरकार  
आयुष मंत्रालय

लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न सं.1491

10 फरवरी, 2023 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

**पर्यावरण को औषधीय पादपों से लाभ**

1491. श्री अर्जुन लाल मीणा:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या मंत्रालय का औषधीय पादपों की खेती में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के साथ समन्वय करने का विचार है क्योंकि उनका पर्यावरण में शुद्धिकरण और संतुलन बनाए रखने में अत्यधिक महत्व है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

**उत्तर**

**आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)**

(क) और (ख): जी हां। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय औषधीय पादपों से संबंधित क्रियाकलाप जैसे रोपण, संरक्षण, अनुसंधान एवं विकास आदि को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के साथ समन्वय करता है। एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय ने संयुक्त वन प्रबंधन समितियों (जेएफएमसी)/जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी) आदि के माध्यम से औषधीय पादपों के संरक्षण, संसाधन वृद्धि और मूल्यवर्धन तथा आजीविका सृजन के लिए राज्य वन विभागों की 557 परियोजनाओं के लिए भी सहयोग प्रदान किया है।

औषधीय पादपों के संसाधन संवर्धन/रोपण के तहत 69709.87 हेक्टेयर क्षेत्र और औषधीय पादपों के संरक्षण और विकास क्षेत्रों (एमपीसीडीए) की स्थापना के लिए 20589.45 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए पूरे देश में राज्य वन विभागों को सहायता प्रदान की गई है।

इसके अतिरिक्त, एनएमपीबी ने पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के तहत विभिन्न संगठनों को अनुसंधान एवं विकास संबंधी क्रियाकलापों की 08 परियोजनाओं के लिए भी सहयोग प्रदान किया है। विगत पांच वर्षों अर्थात् 2018-19 से 2022-23 के दौरान समर्थित अनुसंधान परियोजनाओं का राज्य/संघ राज्य-वार ब्यौरा **संलग्नक** में दिया गया है।

(ग): लागू नहीं।

\*\*\*\*\*

| क्र. सं. | परियोजनाओं का नाम एवं ब्यौरा   |
|----------|--|
| 1        | ऑरोक्सिलम इंडिकम (शयोनक) नामक लुप्तप्राय औषधीय वृक्ष के जर्म प्लाज्म भंडार का विकास वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड   |
| 2        | एंजेलिका ग्लौका एज्यू का इन-विट्रो मास प्रसार। बायोरिएक्टर और बायो-इनोक्यूलेशन तकनीक का उपयोग करके बायोएक्टिव फाइटो-कंपाउंड के उत्पादन के लिए रूटलेट बायोमास वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड  |
| 3        | सैंटलम एल्बम लिन. में भिन्नता को प्रवृत्त करना। जेनेटिक्स सुधार के लिए बाई पॉलीप्लोइडी तकनीक। आईडब्ल्यूएसटी- काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, 18वां क्रॉस, मल्लेश्वरम, बेंगलोर- 560003   |
| 4        | भारतीय चंदन (सैंटलम एल्बम एल.) के सैंडल स्पाइक रोग (एसएसडी) के वेक्टर का निर्धारण और एकीकृत वेक्टर प्रबंधन रणनीतियों का विकास। आईडब्ल्यूएसटी - इंस्टीट्यूट ऑफ वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 18वां क्रॉस, मल्लेश्वरम, बेंगलोर- 560003                                       |
| 5        | शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त औषधीय पादपों का सर्वेक्षण, सूचीकरण, प्रलेखन, प्रसार और संरक्षण। मल्टी इंस्टीट्यूट प्रोजेक्ट एएफआरआई- शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर- 342005, जेएनवी- जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-342005 |
| 6        | उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में वितरित आरईटी औषधीय पादप ट्रिलियम गोवैनियानम (नाग छत्री) का इसके संरक्षण और उपयोग के लिए फाइटोकेमिकल, रूपात्मक और आणविक मूल्यांकन। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड  |
| 7        | पश्चिमी घाटों के हासन और चिकमगलूर जिलों में औषधीय पौधों पर आधारित कॉफी बागानों का इकोरेस्टोरेशन, आईडब्ल्यूएसटी, मल्लेश्वरम, बेंगलोर अर्बन, कर्नाटक-560003  |
| 8        | डेस्मोडियम गेंगेटिकम का स्थानिक निके मांडलिंग और जेनेटिक्स विविधता विश्लेषण: शिवालिक हिमालय मल्टी इंस्टीट्यूट प्रोजेक्ट की महत्वपूर्ण औषधीय प्रजाति, ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टीईआरआई), नई दिल्ली, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड                            |